भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान

कपास की खेती के लए साप्ताहिक सलाह (23-29 जून 2015)

यह राज्यों के कृ ष वश्व वध्यालयों और उनके प्रतिनि धयों द्वारा भेजी गयी सूचनायों के आधार पर आधारित है।

मौसम की जानकारी:

राज्य / जिले	साप्ताहिक वर्षा रिकर्ड (मी.मी.)							साप्ताहिक सलाह
	23	24	25	26	27	28	29	
पंजाब								इस सप्ताह (20 से 24 जून) से दौरान अच्छी बरिस की संभावना व्यक्त की गयी है। जब क जून के अतिम सप्ताह में घने बड़ी छाए रहेगे और बूँदा बंदी होगी। जुलाई के पहले दो सप्ताह में अच्छी बारिस की भ वष्यवाणी की गयी है। अतः खेतों में अभी कए जाने वाले सभी कृ ष कार्य जैसे खाद डालना/ मलना , निराई , इत्यादि जून के अंतिम सप्ताह में पुजा करने की सलाह दी जाती है। थ्रप्स और सफ़ेद मकखी की कई स्थानो पर सूचना मल रही है, पर कीटनाशक का छिदकव अभी न करें। अगस्त में बारिश से कीड़ों से राहत प्रदान करेगा।
भटिंडा		7	44	0	0	0		
फरोजपुर		12	48	7		0		
मुकतसर		12	50	4		0		
मानसा		7	44	0	0	0		
हरियाणा								
सरसा		7	50	8	0	0		
हिसार		7	21	8	0	0		
फ़तेहाबाद		7	27	8	0	0		
राजस्थान								
हनुमानगढ़	1	5	15	3	2			
श्रीगंगानगर	1	5	15	3	2			
बांसवाड़ा	3	8	12	15	2			
उड़ीसा								इस सप्ताहऔर जुलाई माह में लगातार बारिस की भ वष्यवाणी कीगयी हैं। जिस दिन बारिस ना हो उस समय बुवाई कार्य पूरा कर लेने की सलाह दी जाती है।
कोरापुट		0	5	8	5	9		
कालाहांडी		19	6	0	0	3		
बोलांगीर		28	9	0	0	0		
गुजरात								इस सप्ताह जून26 तक भारी बारिश की संभावना है बाद के दस दिनों में गुजरात के कुछ हिस्सों में छिटपुट बारिश के साथ बादल छाए रहेगे। अगले एक हफ्ते के दौरान कसी भी बारिश मुक्त दिन के दौरान बुवाई कार्य अवश्य करने की सलाह दी जाता है।
अमरेली	12	100	90	22	0	0		
भावनगर	31	56	29	3	0	0		
जामनगर	1	200	174	56	0	0		
राजकोट	12	144	159	56	0	0		
भरूच	1	62	59	11	5	0		
सबरकांठा		0	57	50	47	11		
सुरेन्द्रनगर		68	159	56	0	0		
अहमदाबाद	2	26	66	39	0	0		
वडोदरा	2	83	83	26	35	5		
पाटन	4	11	100	41				
मेहसाना	1	5	57	52	20	0		
मध्य प्रदेश								इस सप्ताह लगातार बारिस की संभावना की जा रही है। इस दौरान बुवाई कार्य पूरा करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। जुलाई के दुसरे- तीसरे सप्ताह में बुवाई करने से अपेक्षाकृत कम बारिस की संभावना के कारण
खरगोन	5	66	20	3	10	9	18	
धार	10	193	36	9	3	17	19	

खंडवा	10	61	3	4	5	17	16	फसल नमी तनाव (माइस्चज स्ट्रेस) हो सकता है अतः इस सप्ताह बुवाई की सलाह दी जाती है।
महाराष्ट्र								इस सप्ताह के अंत में बादल छाए रहेंगे और बारिश से मुक्त होने की भ वष्यवाणी की है। यदि बुवाई पहले नहीं कया गया है तो यह बुआई पूरा करने के लए सबसे अच्छा समय है। जुलाई के पहले सप्ताह में भारी बारिश होने की उम्मीद कर रहे हैं,इस लए 25-30जून का समय खेतों सभी कृ ष कार्य (फील्ड अप्रेशन) के लए सबसे अच्छा है
नागपुर	15	11	3	0	0	0	0	
वर्धा	12	6	2	0	0	0	0	
चंद्रपुर	21	1	3	0	0	0	2	
यवतमाल	1	1	2	0	0	0	0	
अमरावती	25	12	4	2	5	4	2	
अकोला	22	10	3	0	0	0	0	
बुलढाणा			2	3	1	3	0	
परभनी	5	4	8	0	7	0	0	
नांदेड़	12	2	7	0	9	0	0	
बीड़	18	4	3	0	6	0	0	
वा सम	3	3	2	0	0	0	0	
धुले	0	4	5	10	20	17	15	वर्षा सं चत क्षेत्रों में तत्काल बुआई आवश्यक है। इन क्षेत्रों में देर से बुआई की गयी फसल में नमी तनाव का सामना करेंगे।
जलगांव	2	2	8	0	3	6	3	
जालना	8	3	7	0	0	0	3	
औरंगाबाद	4	5	6	10	13	11	15	
तेलंगाना								इस हफ्ते राज्य में बुवाई के लए सबसे अच्छा समय है। आदिलाबाद में जुलाई के पहले दो हफ्तों में अच्छी बारिश की भ वष्यवाणी की गयी है। बाकी जिलों में बदली के साथ छिट पुट बूंदा बांदी की भ वष्यवाणी की गयी है। आदिलाबाद के अलावा अन्य जिलों में 8 से 30 जुलाई के दौरान मध्यम बारिस की भ वष्यवाणी की गयी है। सभी वर्षा सं चत क्षेत्रों में बुवाई कार्य इस सप्ताह पूरा कया जाना चाहिए
आदिलाबाद	1	3	5		4	0	0	
वारंगल	2	0	6		8	5	0	
खम्मन	3	4	5		0	0	0	
करीमनगर	3	0	5		0	0	0	
नालगोंडा	1	0	5		0	0	0	
आंध्रप्रदेश								सं चत क्षेत्रों में बुवाई कार्य कर लेनेकी सलाह दी जाता है।
गुन्टूर	8	6	5		8	4	0	
प्रकासम	3	5	3		6	4	0	
कर्नाटक								वर्षा सं चत क्षेत्रों बुवाई तुरंत लया जाना चाहिए एवं सं चत क्षेत्रों में बीटी-कपास संकर जितना जल्दी संभव हो सकता है बोया जाने की सलाह दी जाती है।
धारवाड़	4	12	15	9	7	6		
हवेरी	3	12	6	5	6	5		
मैसूर								
त मलनाडु								यह सुनिश्चित करें क गूलर गठन/बनाने (Boll formation) के दौरान फसल को नमी तनाव का सामना न करना पड़े इस लए जहां तक संभव हो संचाई करने की सलाह दी जाती है।
पेरमबेलूर	0	0	0	0	0	0		
सलेम	1	0	0	0	0	0		
त्रिची		0	0	0	0	0		
वरडुनगर	0	0	0	0	0	0		

आदर्श वर्षा					
वर्षा म.मी.	<5	5-20	20-50	50-80	>80

सीआईसीआर द्वारा प्रबंधन रणनीति की सफारिशें:

(के.आर. क्रांति द्वारा ल खत: इस सलाह का कोई हिस्सा कसी भी प्रकाशन इलेक्ट्रॉनिक या प्रंट या कस अन्यसाधन में कसी भी रूप में लेखक के अनुमति के बिना इस्तेमाल कया जा सकताहै।)

इस सं क्षप्त नोट में प्रबंधन रणनीति की सफारिशें सीआईसीआर कए गए प्रयोगों के परिणामों के आधार पर और व भन्न राष्ट्रीय और वैश्विक एजें सयों द्वारा वक सत पारिस्थिति के अनुरूप वक सत दिशा-निर्देशों के आधार पर कया जा रहा है।

समान्य फसल स्वास्थ्य प्रबंधन:

1. जल्दी परिपक्व होने वाले या संकर-बीटी-कपास कस्मों को वर्षा सं चत क्षेत्रों में प्राथ मकता दिया जा सकता है।
2. पहली बारिश(80 ममी) वर्षा के तुरंत के बाद वर्षा सं चत क्षेत्रों में जल्दी बुवाई को प्राथ मकता दिया जाना चाहिए।
3. वर्षा सं चत क्षेत्रों में वशेष रूप से उच्च घनत्व रोपण व ध में लकीरें (रिजेज़) पर बुआई सबसे ज्यादा कया जाता है।
4. वर्षा सं चत क्षेत्रों में जहां सचाई सु वधा हो वहाँ संकर-बीटी-कपास 90X30 सेमी दूरी पर अ धक चौड़ाई (व्यापक रिक्ति) में बोया जा सकता है।
5. गैर बीटी कस्मों सूरज जैसे (सीआईसीआर) एनएच 615, (वी.एन.-भी, परभणी), एकेएच 081 (डॉ पीडीकेवी अकोला), फुले धन्वन्तरी (एमपीकेवी राहुरी) और अंज ल (एलआरके516)जल्दी परिपक्वहोने वाली कस्में हैं यदि इन कस्मों को उच्च घनत्व में 15 जून से पहले 60**x**10 (फुलेधन्वन्तरी के लए 40x10cm) सेमी दूरी पर रोपण कया जाता है तो सूखा तनाव और बोलवर्म के प्रकोप से फसल बच जाएगा।
6. गैर बीटी कपास की कस्मों की दो पंक्तियो के बीच एक पंक्ति में ब्रेडायरिजोबियम जेपेनिकम से उपचारित लोबिया या सोयाबीन के बीज को 45 सेमी दूरी पर वैकल्पिक (आल्टर्नेट) पंक्तियों में 10 सेमी पौधे से पौधे दूरी पर लगाया जा सकता है।
7. अंतर फसल (इंटर क्रो पंग) में सोयाबीन या लोबिया के बीज को ब्रेडायरिजोबियम जेपेनिकम से उपचरित कर संकर बीटी के साथ लगाया जा सकता है।
8. कपास के खेतों की सीमा पंक्तियों में अरहर की (2-3 पंक्तियाँ) लगाने से मली बग (आटे के कीड़े) का प्रकोप को रोकने के लए सहायक होगा और ये रिफ़्यूजिया (**refugia**) के रूप में सेवा करते हैं।
9. पहली बारिश के बाद फार्म खाद या कम्पोस्ट 5 से 10 टन /हेक्टेयर की दर से खेतो में डाला जाना चाहिए।
10. एजोबेक्टर और पीएसबी 25 ग्राम प्रति कलोग्राम बीज की दर से पोषक तत्वों नियतन (फ़क्सेशन) के लए इस्तेमाल कया जाना चाहिए।
11. क्राइ 1 एसी (Cry1Ac) की उ चत अ भव्यक्ति सुनिश्चित करने के लए और पत्ता लाल रोग की समस्या को कम करने के लए 1% कोबाल्ट क्लोराइड का छिड़काव करें। स्थूल और सूक्ष्म पोषक के लए अनुकूल पोषक तत्व प्रबंधन क्राइ 1 एसी (Cry1Ac) की उ चत अ भव्यक्ति सुनिश्चित करने और पत्ता लाल रोग की समस्याओं को कम करने के लए **$MgSO_4$**2% यूरिया के साथ 2% डीएपी का छिड़काव करें। वल्ट के प्रारं भक चरण में पौधों की रिकवरी के लए 1% कोबाल्ट क्लोराइड का छिड़काव तथा 1% बाबेस्टीन से तने के आस पास की म ी को गीला (तर) करें यह फसल की तंदरुस्ती के लए मददगार पाया गया है।
12. पत्ता लाल रोग का निवारण: 90 दिन के फसल मे 2% यूरिया,0.5% जिंक सल्फेट और 0.2% बोरान दो बार में 15 दिनों के अंतराल में छिड़काव से लाल पत्ता रोग से बचाव होगा।
13. क लयों (स्क्वेयर) और फूलों का झड़ना रोकने के लए फनोलेक्स 4.5 एसएल ((एनएए) हार्मोन, 21 पीपीएम 7 लीटर प्रति 15 लीटर पानी के दर से मला कर स्प्रेकरें।

कीटों एवं रस चूसक कीटों का प्रबंधन:

सामान्य सफारिशें

ये करें:

1. कीट एवं रस चूसक कीट प्रतिरोधी कस्मों/संकरों का चयन करें। बीटी संकर कस्में कीट एवं रस चूसक कीटप्रतिरोधी होते हैं इनमें कीटनाशकों के छिड़काव की आवश्यकता बहुत कम होती है।
2. कपास के फसल के साथ लोबिया या चारा (सोरगम) या सोयाबीन अथवा काले चने के साथ अंतर-फसल (इंटर-क्राप) लगाने से चूसक कीटों के भक्षक/शकारी कीटों (प्रडेटर) की वृ द्ध के प्रोत्साहन के लए लगाना चाहिए।
3. इमेडाक्लो फ्रड 8 ग्राम, वटावेक्स या थरम 3 ग्राम प्रति कलोग्राम बीज में उपयोग से चूसक कीट (स कंग पेस्ट) और रोगों के खलाफ फसल की रक्षा करेगा।
4. चूसक कीट के लए वशेष रूप से अतिसंवेदनशील कस्मों में नाइट्रोजन उर्वरकोंका उपयोग करने से इससे होने वाले नुकसान को बहुत कम करता है।
5. खेत की स्वच्छता (घाँस मुक्त) बनाए रखें।
6. मली बग संक्र मत पौधों को बाहर निकालें और कपास के खेत से दूर नस्ट करें।
7. कम वघटनकारी कीट प्रबंधन के लए नीम से तैयार कीटनाशक और जै वक नियंत्रण वकल्प का उपयोग करें।
8. गुलाबी सूँडी (पंक बोल वर्म) की निगरानी के लए फेरोमोन ट्रेप का उपयोग कुशल एवं प्रभावकारी साधन है।
9. मरीड बग, मली बग और अन्य चूसक कीटों (स कंग पेस्ट) के प्रभावी एवं पर्यावरण के अनुकूल नियंत्रण के लए पौधों के तनों में और जड़ों के आस पास इमेड़ाक्लो फ्रड डाइमेथोयेट या ए सफेट 30-40 डीएएस और 50-60 डीएएस का उपयोग प्रभावी नियंत्रण के लए करें।

ये ना करें:

10. कपास में पर्ण कुंचन वायरस के प्रकोप को रोकने के लए उत्तर भारतीय क्षेत्रों में देर से (15 मई के बाद) कपास की बुआई करने से बचें।
11. कीटों के प्राकृतिक एवं स्वाभा वक जै वक नियंत्रण के लए जहां तक संभव हो सके फसल के पहले दो माह तक रासायनिक कीटनाशक के उपयोग ना करें।
12. कपास के पत्ता मरोड़क (लीफ फोल्डर) के नाबा लक और नगण्य लेप्टोटेरीन कीटों जैसे की साइलेप्टा डेरोगेटा एमोनिस फ्लेवा और से मलूपर के लए कीटनाशक का छिडकाव न करें। इनके लार्वा से कपास की नगण्य नुकसान होता है। ये पैरा सतएड की लए मेजबान के रूप में सेवा देता है। जैसे ट्राइकोडर्मा, एपेंटेल्स और साइसीरोपा फार्मोसा प्रजाति जो हेलोकोवर्पा आर्जिमेरा और अन्य बालवर्म पर हमला कर उनको नष्ट करता है।
13. चयन के दबाव से बचने के लए बीटी कपास पर बीटी-योगों का स्प्रे न करें।
14. पत्तों से संबन्धित नियोनिकोटिनाइड कीटनाशकों का उपयोग करने से बचें जैसे क एसेटामी प्रड), ई मडाक्लो प्रड क्लो थए डन और थाईमेथोजेम , चूं क संकर कपास के बीज इमेडाक्लों प्रड से उपचरित होते हैं इस लए कीटों में इनके और उपयोग से इनके प्रति प्रतिरोध क्षमता बढ़ जाने की संभावना होती है।
15. डब्ल्यूएचओ ग्रेड -1 कीटनाशकों का उपयोग न करें। अत्यंत खतरनाक श्रेणी के कीटनाशकों जैसे क फास्फे मडोन मथाइलपैरा थओन, फोरेटे, मोनोक्रोटोफॉस डाईक्लोर्वोस कार्बोफुरान ट्राईज़ोफास और मेटासाइस्टोस।
16. फप्रोनिल और पाइरेथ्रोड़ सफेद मक्खी (व्हाइटफ्लाई) के प्रकोप रोकने के लए न करें।
17. कीटनाशक मश्रण का उपयोग बिलकुल ना करें कीटनाशक मश्रण से पारिस्थितिकी प्रणा लयों (इको- सस्टम) बा धत होती है जो गंभीर रूप कीट प्रकोप आमंत्रित करती हैं।ये कीटनाशक ल क्षत नाशीकीटों के लए चयनित अति वषैले है जब क कपास पारिस्थिकीतंत्र में लाभदायक कीटों के लए कम वषैले हैं। ये कीटनाशक पर्यावरण हितैषी कीटनाशक प्रतिरो धता प्रबंधन कार्यक्रम के लए उपयुक्त है।

गुलाबी सूँडी और चितिदार सूँडी : इनके लए आ थक हानि सीमा है – 10 हरे गुलरों में एक जी वत सूँडी मलने पर या लगातार तीन रातों में 8 पतंग (कट) प्रति ट्रेप प्रति रात पकड़ में आने पर; क्विनोलाफास 25 इसी या का 2 मली प्रति लीटर पानी की दर से या थायो डकार्ब 75 डब्लू पी का या कोई पाइरेथ्रोइड का फसल पर छिड़काव करें।

अन्य कीटों का नियंत्रण:

1) स्पोडोप्टेरा लटुरा: इस इल्ले के अण्ड पुंजों को हाथ से इकत्र करें अथवा एसएनपीवी (स्पोडोप्टेरा लटुरा न्यूक्लियर पॉलीहेड्रो सस वायरस) का 500 एलई/ हे. की दर से या नोवाल्यूरोन 10 ईसी का 200 मली या थायो डकार्ब (ला र्वन) 75 डब्लू पी 250 ग्राम पाउडर 250 लीटर पानी में मला कर प्रति एकड़ छिदकव करें।

2) प्ररोह घून के नुकसान को कम करने के लए प्रोफेनोफास 2 मली प्रति लीटर पानी की दर से फसल पर छिदकव करें।

3) भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में घोंगें का प्रकोप: अ धक वर्षा वाले क्षेत्रों में घोंघे का प्रकोप: प्रलोभक मेटेल्डीहाइड 2% (स्नेल कल) 12.5 क. ग्रा. /हे. की दर से घोंघों के छिपने की जगह पर प्रयोग करें । मेढों, फसल के चारों ओर उन जगहों पर डालें जहां इनका नुकसान दिखायी दे।

रोग प्रबंधन:

नवीन मुरझान (पैरा वल्ट) मुरझान/ जड़ गलन:

कुछ खेतों में सूखा के बाद वर्षा होने या सचाई करने परइसके लक्षण फसल में दिखायी देते हैं। प्रभा वत पौधों पर मुरझान के लक्षण दिखायी देने के कुछ घंटों में ही कोबाल्ट क्लोराइड 10 म. ग्रा. प्रति लीटर पानी की दर (पीपीएम) से छिड़काव करे या प्रभा वत पौधों की जड़ों में कापर-आक्सी-क्लोराइड 25 ग्रा. तथा यूरिया 200 ग्राम या कार्बेडेजिम 1 ग्रा./लीटर की दर से 10 लीटर पानी लेकर म ी को तर करें।

गूलर सड़न:

साधारणतः प्रारम्भिक वक सत पौधे के निचले हिस्से के गूलर बादलों के मौसम या लगातार रिम झम बारिसहोते रहने की स्थिति में गूलर सड़ जाता है। मैकोजेब 75 डब्लूपी + क्लोरो थेलोनिल 70 डब्लूपी प्रत्येक 2 ग्राम पाउडर प्रति लीटर पानी की दर से ले कर फसल पर छिड़काव करें। अच्छा पराभव लाने के लए सल्वेट 99 के 10 ग्राम या 10 ग्राम ट्राइट्न 50 मली 100 लीटर पानी की दर से मलाए।

एल्टरनेरिया अंगमारी:

मेंकोजेब 25 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से फसल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें।

माइरोथे सयम पत्ती धब्बा रोग और जीवाणु झुलसा:

स्टेप्टोसाइक्लीन सल्फेट (15-20 ग्रा./हे.)+कापरआक्सीक्लोराइड (2000 ग्रा./हे.) 200-250 लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।

खरपतवार प्रबंधन:

छोटे खरपटवारों पर खरपतवारनाशक अ धक प्रभावी होते हैं।

घांसें: क्वीजेलोपोफ- इथाइल या फेनोक्साप्रोप-इथाइल या फ्लूएजीफ़ोप-ब्यूटाइल का छिड़काव।

नरकर और घासें:प्रोपेक्विजाफोप-इथाइल का छिड़काव करें।

चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार:पाइरो थयोबेक सो डयम का छिड़काव करें।

खरपटवारों उगने पर खरपतवारनाशकों से उनका समयबद्ध एवं प्रभावी नियंत्रण होता है।

जब खेत की म ी गीली हो तो हाथ से निराई में मुश्किल हो जाती है ऐसे नेंशाकनाशी वशेष रूप से प्रभावी और समय पर नियंत्रण प्रदान करता है।खरपतवारनाशी (हर्बीसाइड) नवजात खरपतवारों (10-15 दिनों आयु से कम) पर अ धक प्रभावी एवं कारगर होते हैं। घाँसकुल के खरपतवारों के नियंत्रण के लए क्लोजईलोफोपइथाइल, फेनोक्सप्रोप सो डयम, फ्लुयाजीफोप ब्यूटाइल,का प्रयोग कर सकतें हैं। नरकर और घासों के लए पायरिथोबक ईथाइल हैं और चौड़ी पत्तीवाले खरपतवारों के लए पायरीओ थबेक सो डयम कारगर है। अ धक जानकारी के कए कृ ष वश्व वधालयों ए तकनीकी वशेषज्ञों से वचार वमर्श कर सकते हैं।

जल जमाव प्रबंधन:

कपास अतिरिक्त पानी के लए बहुत संवेदनशील है।मध्य और द क्षण भारत के कई हिस्सों में अ धक बारिश कारण के पानी का जमाव होने सेसमस्याग्रस्त कया जा सकता है।गहरी काली म ी पर उगाए गए कपास जहां पानी निकासी व्यवस्था कमजोर है वहाँ जल जमाव की वजह से कपास की फसक प्रभा वत है।भारी वर्षा की स्थिति में खेतों सेपानी निकासी के लए भू म के ढलान के साथ पर्याप्त मात्रा में जल निकासी चैनलों याअतिरिक्ततरीके से पानी निकासी की व्यवस्था करें।उन क्षेत्रों में जहां वर्षाअ धमानतः 700-900 ममी हो वहां म ी में बेहतर की नमी संरक्षणके लएभू म को पुनः निर्माण कर लकीरें (रिजेज़) रिज हल की मदद से बनाए। यह तकनीकी और कपास की लकीर (रिजेज़) में बुवाई से वर्षा जल का संरक्षण होगा और ये रिजेज़ और फ़रोज भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में अतिरिक्तजल के लए जल निकासी चैनलों की तरह कार्य करतें है।

ड्रेनेज चैनलखेतों की सीमाओं में साथ खोला जाना चाहिए, जिससे अतिरिक्त जल आसानी से खेतों से निकाला जा सके। यदि बुवाई अभी तक पूरा नहीं कया गया तो रिजेज़ और फ़रोजके शीर्ष में तुरंत बुवाई शुरू करने के लए सफारिश की है।यह मानना है क रिजेज़ के शीर्ष पर लगाकर लकीरें अतिरिक्त पानी बाहर निकाल जाएगा जिससे भारी बारिश फसल को प्रभा वत नहीं करेगा क्यों क रिजेज़ और फ़रोज के निर्माण से अतिरिक्त जल खेतों से बाहर निकाल जाएगा। यदि भारी बारिश के मौसम का पूर्वानुमान कर रहे हैं तो फसल उत्पादन लागत घाटे को कम करने की लए उर्वरक छिदकव स्थ गत कया जा सकता है।

फसल जल जमाव के कारण पौधापीला हो जाता है तो 0.5-1.0% डीएपी या 19:19:19 (नाइट्रोजन के घुलनशील यो गक) का पत्तों पर साप्ताहिक अंतराल मेंछिदकाव (फो लयर स्प्रे) करने से पौधों जल जमाव के प्रभाव से उबरने में मदद मलेगी।

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:	
वैज्ञानिक	पता
डॉ. के.आर. क्रांति	निदेशक, केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ए. एच. प्रकाश	प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रधान, केकअनुसं, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर (त मलनाडु)
डॉ. डी. मोंगा	प्रधान, केकअनुसं, क्षेत्रीय केंद्र, सरसा (हरियाणा)
डॉ एस. बी. संह	प्रधान, फसल सुधार वभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. संध्या क्रांति	प्रधान, फसल संरक्षण वभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ब्लेज़ डीसूज़ा	प्रधान, फसल उत्पादन वभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. इसाबेला अग्रवाल	वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (त मलनाडु)
श्री एम.सबेस	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (त मलनाडु)

प्रभारी वैज्ञानिक, मौसम वज्ञान वभाग (एआइसीएसटीआइपी केंद्र)

वैज्ञानिक	पता	मोबाइल नं.	ईमेल
डॉ. परमजीत संह	पंजाब कृ ष वश्व वद्यालय,(पंजाब)	9463628801	rsmeenars@gmail.com
डॉ.पंकज राठोर	पंजाब कृ ष वश्व वद्यालय, (पंजाब)	9464051995	pankaj@pau.edu
डॉ. जगदीश बेनीवाल	सीसीएस-हरियाणा कृ ष वश्व वद्यालय, हिसार (हरियाणा)	9416325420	cotton@hau.ernet.in
डॉ. एस.एल.आहूजा	सीसीएस-हरियाणा कृ ष वश्व वद्यालय, सरसा (हरियाणा)	9255947380	slahuja2002@yahoo.com
डॉ. के. एन. भाटिया	स्वामी केशवानन्द कृ ष वश्व वद्यालय,गंगानगर (राजस्थान)	9352700411	bsmeena1969@rediffmail.com
डॉ. हरफूल मीणा	महारणा प्रताप, कृ ष एवं तकनीकी वश्व वद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)	9460246043	hpagron@rediffmail.com
डॉ. नरेंद्र कुमार	सीएसए- कृ ष एवं तकनीकी वश्व वद्यालय, कानपुर (उ. प्र.)	9335699132	jagdishk64@yahoo.com
डॉ. गोफाल्डू	नवासारी कृ ष वश्व वद्यालय, नवासारी (गुजरात)	9662532645	girishfaldu@rediffmail.com
डॉ. एम.डी.खानपारा	जूनागढ़ कृ ष वश्व वद्यालय, जूनागढ़ (गुजरात)	9426990070	cotton@jau.in
डॉ. आर.डब्लू. भरूद	महात्मा फुले कृ ष वद्यापीठ, रीठरी (महाराष्ट्र)	9850244087	cotton_mpkv@rediffmail.com
डॉ. आर.आर. पाटिल	पंजाब राव देशमुख कृ ष वद्यापीठ, अकोला (महाराष्ट्र)	9657725801	srscottonpdkv1@yahoo.co.in
डॉ.पी.आर.झाँवर	मराठवाडा कृ ष वश्व वद्यालय, परभनी (महाराष्ट्र)	7588151244	crsned@indiatimes.com
डॉ. सतीश परसाई	आर.वी.एस. कृ ष वश्व वद्यालय, ग्वा लयर (मध्य प्रदेश)	9406677601	aiccipkhandwa@gmail.com
डॉ. बी.एस. नायक	उड़ीसा-कृ ष एवं तकनीकी वश्व वद्यालय, भुवनेश्वर- (उड़ीसा)	9437321675	bsnayak2007@rediffmail.com
डॉ. एस। भारती	आचार्य एन.जी. रंगा कृ ष वश्व वधायल, नादयाल(आंध्र प्रदेश)	949072341	bharathi_says@yahoo.com
डॉ. शर्मा	आचार्य एन जी रंगा कृ ष वश्व वद्यालय,नांदयाल (आंध्रप्रदेश)	08514-242296	sharmarars@gmail.com
डॉ. अलादीक ी	धारवाड़ कृ ष वश्व वधायल, धारवाड़ (कर्नाटक)	9448861040	yraladakatti@rediffmail.com
डॉ. भीमना	रायचूर कृ ष वश्व वद्यालय, रायचूर- (कर्नाटक)	9448633232	bheemuent@rediffmail.com

नोट: कीटनाशककी मात्रा, खेतों के क्षेत्रफल या कसी अन्य जानकारी में यदि कोई संशय हो तो इसके अंग्रेजी संस्करण से संशय समाधान अवश्य करें।

हिन्दी संसकरण: रजनीकान्त चतुर्वेदी, तकनीकी अ धकारी एवं हिन्दी अ धकारी, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)

-इति-